Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

संस्कृत के आदिकवि कालिदास के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. अनिता पाटीदार*

* अतिथि विद्वान (हिन्दी) शासकीय महाविद्यालय, शामगढ (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – संस्कृत साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्रों में अद्भुत, ज्योतिस्वरूप प्रकाश पुंज, आभा से अलंकृत, मां काली एवं ज्ञानप्रदायिनी सरस्वती के वरद पुत्र, शैवधर्मावलम्बी, वैदर्भी रीति में निष्णात, अन्त: प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति समायोजन में दक्ष, पात्र के चरित्र चित्रण के अनुकूल, जनमानस के हृदय को विडोलित करने वाले, अक्षयनिधि महाकवि कालिदास भारतीय ज्ञान परंपरा से महिमा मंडित है जिनके यशोगाथा विश्व पटल पर प्रासंगिक है। आपके महाकाव्य, दृश्यकाव्य एवं खण्डकाव्यों से संयुक्त सप्तग्रन्थमयी कृतियाँ अपने आप में उत्कृष्टता, दिव्यता को द्योतित करती है।

कालिदास के जीवन सम्बन्ध में अनेक किंवदंतियाँ प्रसिद्ध हैं। एक पारम्परिक मान्यता के अनुसार कालिदास सम्राट् विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों में से एक थे, वे उच्च कोटि के एवं प्रतिभावान, महाकवि और नाटककार थे इस सन्दर्भ में एक श्लोक भी बहुचर्चित है।

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशङ्कु–
वेतालभट्टघटखर्परकालिदासा: ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते: सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य ।।

यह विक्रमादित्य वही है जिन्होंने विक्रम संवत् आरम्भ किया।

इस प्रकार संस्कृत वाङ्मय के रचनाकारों में रामायण और महाभारत के रचयिता वाल्मीकि, व्यास का जो गौरवमय स्थान है, वही स्थान कालिदास का है। भारतीय ज्ञान परंपरा में कालिदास का स्थान अद्वितीय और अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें संस्कृत साहित्य का आदिकवि कहा जाता है, और उनकी कृतियाँ न केवल साहित्यिक उत्कृष्टता का प्रमाण हैं बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति, प्रकृति और दार्शनिक विचारों का भी सजीव चित्रण प्रस्तुत करती हैं। कालिदास ने अपने साहित्य में मानवीय संवेदनाओं, सौंदर्य, और गहन जीवन–दर्शन को पिरोया, जिससे उनकी रचनाएँ आज भी प्रेरणा और मार्गदर्शन का स्रोत हैं। भारतीय साहित्य में कालिदास ने संस्कृत भाषा और उसकी काव्य परंपरा को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया, जो बाद के कवियों और साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई ।

कालिदास का समय भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग था। उस समय भारत में गुप्त साम्राज्य की स्थापना हो चुकी थी, जो कला, विज्ञान, और साहित्य में अनुपम उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध था। गुप्तकाल को 'भारत का स्वर्णिम युग' कहा जाता था और इस युग में कालिदास जैसे कवियों और लेखकों ने भारतीय साहित्य को शिखर पर पहुँचाया। कालिदास की रचनाएँ भारतीय जीवन के हर पहलू को छूती हैं उनके साहित्य में मूल्य, प्रेम, प्रकृति, वीरता, धर्म, कर्तव्य, और आत्मचिंतन का अद्वितीय संगम देखा जा सकता है। उनका साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति का गहन अध्ययन प्रस्तुत करता है, तथा समाज और प्रकृति के प्रति संतुलित दृष्टिकोण का समर्थन करता है।

वे पश्चिमी जगत के अनुतप्त हृदयों को भी अपनी सहजता एवं आध्यात्मिकता से परितोष प्रदान करते है। भारतीय शेक्सपीयर के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के देदीप्यमान नक्षत्रों के प्रभाव से अन्य देशों की संस्कृतियों का कम रह जाता है।

स विश्ववन्द्यो महतां कवीनां गुरुर्मनीषी कवि कालिदास: ।
यत्काव्यपीयूषरसप्रवाह: स्वादामितानन्दमयो हि लोक: ।। – रघुवंशम्

कालिदास की रचनाएँ न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी भारतीय साहित्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी रचनाएँ भारतीय समाज, संस्कृति, प्रेम, धर्म और प्रकृति के प्रति सम्मान को दर्शाती हैं। उनके साहित्य का अध्ययन हमें भारतीय समाज के मूलभूत आदर्शों को समझने में मदद करता है और उनकी कृतियाँ आने वाली पीढ़ियों के लिए साहित्यिक धरोहर के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा से जनमानस को चेतना प्रदान करते रहेंगे

गुप्तकालीन समाज में धार्मिक सहिष्णुता थी, और हिंदू धर्म के साथ–साथ बौद्ध और जैन धर्म को भी संरक्षण मिला। यह सहिष्णुता कला और साहित्य में भी झलकती है, जहाँ देवी–देवताओं के साथ–साथ मानव और प्रकृति का सुंदर चित्रण हुआ है। यह काल धर्म, संस्कृति, दर्शन, और जीवन के आदर्शों का संगम स्थल था।

कालिदास के साहित्य ने अनेकता में एकता, विश्वबन्धुत्व की चेष्टा, श्रद्धातत्त्व की प्रमुखता, सहयोग व समन्वय की सरसता के द्वारा सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति को तिरस्कृत कर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप स्थापित कर अद्वितीय स्थान प्राप्त कर लिया है। गुणों की खान से ही संस्कार का जन्म होता है, जो व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से सफलता के शिखर पर ले जाता है। उनकी रचनाओं मे नैतिक मूल्य, षोडश संस्कारों, चतुष्टयों, व चार आश्रम व्यवस्था का चित्रण है।

कालिदास की कृतियों में संस्कारों पर अधिक वर्णन है। वैदिक काल से ही सोलह संस्कार की संख्या सर्वमान्य है, कालिदास भी इसी विचारधारा से प्रभावित हैंस जिस विधान से वे अपने पात्रों का संस्कार करते हैं उससे यह स्पष्ट होता है कि कालिदास स्वयं वैदिक पुरुष हैं। उनके लिए एसा कहा जा सकता है कि 'भारतीयेषु संस्कार: संस्कर्तासु महाकवि:'।

महाकवि कालिदास की दृष्टि में पार्थिवों के राजा दिलीप श्रेष्ठ तपस्वी हैं। दिलीप ने सन्तान प्राप्ति हेतु वसिष्ठ के आश्रम में इक्कीस दिन की तपस्या की। वहाँ जिस व्रत का उपदेश एवं पालन विधि का निर्देश ऋषि ने उन्हें दिया उसका उन्होंने सम्यक् पालन किया। अथर्ववेद में भी पुत्र की कामना की गयी है जिससे व्यक्ति पितृऋण से मुक्त हो जाता है।

निर्दिष्टां कुलपतिना स पर्णशालामध्यास्य प्रयतपरिग्रह: द्धितीय:।
तच्छिष्याध्ययनिवेदितावसानां संविष्ट: कुशशयने निशां निनाय ।।'

मनुष्य दान से उपभोग और ब्रह्मचर्य से दीर्घायुष्य प्राप्त करता है तपस्या से स्वर्ग, सुयश, दीर्घायुष्य, उच्चपद, उत्तमोत्तमभोग, ज्ञान-विज्ञान, आरोग्य सम्पत्ति, सौभाग्य आदि सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है-

तपसा प्राप्यते स्वर्गस्तपसा प्राप्यते यश:।
आयु: प्रकर्षो भोगश्च लभ्यन्ते तपसाविभो ।।

अहिंसा, दीक्षा के रखने वाले को फल की प्राप्ति वहीं कंदमुल पत्ता चबाकर तप करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति होती है इसका वर्णन है

अहिंसाया: फलं रुपं दीक्षाया: जन्मवैकुले।
फलमूलाशिनां राज्यं स्वर्ग: पर्णाशिनां भवेत् ।।

नन्दिनी की सेवा उनका तप है। जो भारतीय ज्ञान परंपरा को दर्शाता है

ज्ञानं विज्ञानमारोग्यं रुपं सम्पत्ताथैव च।
सौभाग्यं चौव तपसा प्राप्यते भरतर्षभ ।।

अग्नि के महत्त्व से भी कालिदास प्रभावित हैं, वे कहते हैं कि-अग्नि तपस्या का स्वामी है:

हवींषि मन्त्रपूतानि हुताश ! त्वयि जुह्वत:।
तपस्विनस्तप: सिद्धिं यान्ति त्वं तपसां प्रभु: ।।

वस्तुत: अग्नि की यह महत्ता वैदिक युग के अग्नि देव का स्मरण कराती है। इसी प्रकार वरुण, सूर्य, यम, त्वष्टा, रुद्र, मरुत् आदि देवताओं तथा शची, सरस्वती, अदिति, पृथिवी, अग्निपत्नीस्वाहा आदि देवियों का अभिधान कर कालिदास भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

भारतीयता की पहचान यज्ञों से है। यहाँ तो सृष्टि का आरम्भ ही यज्ञ से हुआ। कालिदास इस भावना से बहुत प्रभावित हैंय उन्होंने अपने श्रुतिसर्वस्व रघुवंश का प्रारम्भ ही उस दिव्य नायक से किया दिलीप का पुत्र रघु पूरे विश्व पर शासन करते हैं, दिग्विजय यात्रा करते हैं और विश्वजित् यज्ञ करते हैं।

रघुवंश के 17वें सर्ग में अतिथि का अभिषेक, गौ की उपमा सम्भवत पुराणों में प्राप्त वसिष्ठ की कामधेनु के संकेत है अत: कामधेनु तथा नन्दिनी का वर्णन मूलत: गौ माता के प्रति श्रद्धा है। कालिदास ने सूर्य के अश्वों का हरित् नाम बताया है यही बात वेदों में भी है। कालिदास ने पुत्र को ज्योति कहा है और उसके जन्म से पितृऋण से मुक्ति मानी है। कालिदास के साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के दिग्दर्शन होते हैं।

कालिदास ने प्रमुख रूप से महाकाव्य, खंडकाव्य और नाटक लिखे हैं। उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं' 'रघुवंशम', 'कुमारसंभव','मेघदूत','ऋतुसंहार', 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्', 'विक्रमोर्वशीयम्', और 'मालविकाग्निमित्रम् उनकी कृतियाँ केवल अपने समय के लिए नहीं बल्कि सदियों बाद भी विश्व साहित्य में अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। कालिदास की रचनाओं को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि वह प्रकृति को अपनी रचनाओं का एक अभिन्न हिस्सा मानते थे। उनकी कविताओं में नदियाँ, पर्वत, बादल और ऋतुएँ जीवंत हो उठती हैं हिमालय पर्वत की प्राणोपयोगी सम्पदा के उल्लेख से भारत की प्राकृतिक प्रचुर सम्पत्ति का वर्णन किया है। हिमालय पर्वत में मिलने वाली जड़ी-बूटियाँ, वन्यपशु, पुष्प प्रजातियों, रत्नधातु आदि के गीत गाते हुए कवि थकता नहीं है

अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सोभाग्यविलोपि जातम्।
एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाङ्क:।।

समग्र वैदिक धर्मो के प्रति, मानवमात्र के प्रति सहनशीलता का पाठ इनके काव्य मे मिलता है 'रघुवंशम' एक महाकाव्य है जिसमें राजा रघु के वंशजों की कहानियाँ वर्णित हैं। यह काव्य 19 सर्गों में विभक्त है, जिसमें रघुवंश के महान राजाओं की वीरता, उनके नीति-नियम, आदर्श, नैतिक मूल्यों और जीवन का उत्कृष्ट चित्रण है। इस काव्य में अयोध्या के राजवंश, विशेषकर भगवान राम के वंश की कथा हैं। इसमें राम के आदर्श, चरित्र और उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का सुन्दर वर्णन है जो आज मानव जाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है ।

कुमारसंभव महाकाव्य 17 सर्गों में विभाजित है। राजा रघु के वंशजों की कथा, माता पार्वती की तपस्या, शिव का वैवाहिक जीवन, और कुमार कार्तिकेय के जन्म प्रसंगों का विस्तृत विवरण है। इस काव्य में प्रेम, भक्ति, त्याग, मर्यादा, आदर्श, नैतिकता के अद्भुत उदाहरण हैं जो मानव जीवन में प्रकाश एवं सत्तामार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं, कालिदास ने प्रकृति के माध्यम से शिव-पार्वती के उत्कृष्ट प्रेम को दर्शाने, शिव-पार्वती की प्रेमकथा को सुंदरता और गहनता से प्रस्तुत किया।

मेघदूत और ऋतुसंहार इसी प्रकार कालिदास के खंडकाव्य हैं, जिनमें प्रकृति का सौंदर्य और मानवीय भावनाओं का अद्धितीय मिश्रण मिलता है। मेघदूत जिसे भारतीय साहित्य में विशेष स्थान प्राप्त है। इस काव्य में एक यक्ष, जो अलकापुरी में अपनी पत्नी से दूर हो गया है, एक मेघ (बादल) को दूत बनाकर अपने संदेश को अपनी प्रिय के पास भेजता है। यह काव्य केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि इसमें प्रकृति का अनुपम चित्रण भी है। ऋतुसंहार यह काव्य छ: सर्गों में विभक्त है जिसमें भारतीय ऋतुओं का वर्णन मिलता है, जिसमें ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर और वसंत ऋतु का अत्यंत सुन्दरता से चित्रण किया गया है। कालिदास ने प्रत्येक ऋतु की विशेषताओं और उनके प्रभावों को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। यह काव्य उनकी प्रकृति के प्रति गहरी प्रेमभावना को दर्शाता है और भारतीय जनजीवन में ऋतुओं के महत्व को भी प्रतिपादित करता है।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् भारतीय नाट्य परंपरा का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। जो उनके युग की सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह साहित्य भारत के भौतिक और आध्यात्मिक जीवन का समन्वय हैस भारतीय समाज के मूल्यों, संबंधों, और जीवन के आदर्शों को प्रस्तुत किया हैं। इस नाटक में राजा दुष्यन्त और शकुंतला की प्रेमकहानी के माध्यम से समाज में प्रचलित आदर्श प्रेम, समर्पण, और नारी सम्मान को कालिदास जी ने अभिव्यक्त किया। यह नाटक भारतीय साहित्य का एक ऐसा अनूठा अमर काव्य बन गया, इसने उस युग के दर्शकों और पाठकों पर गहरा प्रभाव डाला।

कालिदास ने इसी काल के सांस्कृतिक और धार्मिक आदर्शों को अपनी रचनाओं में समाहित किया जिसके कारण आज उनकी रचनाएं भारतीय समाज के शाश्वत मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हरिओम तिवारी,'संस्कृत साहित्य का इतिहास', पृष्ठ 89–110
2. सुरेश चंद्र श्रीवास्तव, 'कालिदास: कवि और कवित्व', पृष्ठ 55–77
3. 'कालिदास का ऋतुसंहार' – सी.आर. देवधर द्वारा अनुवादित, आईएसबीएन: 9788120801624
4. 'ऋतुसंहार: ऋतुओं की माला': ए.एन.डी.द्वारा अनुवादित हक्सर, आईएसबीएन: 9780143414245
5. डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय,'कालिदास और उनका युग',पृष्ठ 45–78
6. एस.एन.दासगुप्ता,'A History of Sanskrit Literature',पृष्ठ 123–145
7. 'कालिदास का रघुवंश' – एम.आर. काले द्वारा अनुवादित, आईएसबीएन: 812080610x
8. 'रघुवंश' – ए.एन.डी. द्वारा अनुवादित हक्सर, आईएसबीएन: 9780140447406 रघुवंश 1.95

****